बिहार में औषधीय कुकरबिट पौधे मिले

बिहार वनस्पति के मामले में बहुत समृद्ध है लेकिन कई वनस्पतियों का दस्तावेज़ीकरण अभी तक नहीं हो पाया है। इसी दस्तावेज़ीकरण के तहत बिहार के कटिहार ज़िले में एक दुर्लभ कुकरबिट *(लुफा एकिनारा रॉक्सिब)* मिला है। इसे आम भाषा में बिंडोल कहते हैं। कुकरबिट दरअसल एक कुल के पौधे हैं जिसमें लौकी, गिलकी, कद्दू वगैरह शामिल हैं।

बिंडोल कटिहार ज़िले में मिर्चईबाड़ी के पास के जंगल में उग रहा है। इस पौधे को सबसे पहले एच.एच. हेन्स द्वारा पड़ोस के पूर्णिया ज़िले में खोजा गया था। इसके बाद इसे नहीं देखा गया। विभिन्न वनस्पति संग्रहालयों में उपलब्ध नमूनों से तुलना करने पर पता चला है कि पूर्णिया या बिहार की किसी अन्य जगह से यह पौधा इसके बाद नहीं देखा गया है।

इस पौधे के सभी भाग स्वाद में कड़वे हैं और वहां के स्थानीय लोग इसका उपयोग मधुमेह के इलाज में करते हैं। पूरे पौधे का महीन पावडर बनाकर इसे दिन में दो बार एक चम्मच के बराबर मात्रा मधुमेह रोगी को पानी के साथ दी जाती है। इस पौधे की ताज़ा पत्तियों का रस भी खून साफ करने के लिए लिया जाता है। कुत्ते के काटने पर इस पौधे के फूल का महीन पावडर बेल की पत्तियों और पान की पत्तियों के साथ मिलाकर 21 दिनों तक हफ्ते में एक बार दिया जाता है।

जंगल के स्थानीय लोगों के इस पौधे के निरंतर उपयोग के कारण इसका ह्रास होता जा रहा है और इसको बचाने के कोई प्रयास भी नहीं किए जा रहे हैं। मिर्चईबाड़ी क्षेत्र में इसके 185 पौधे रिकॉर्ड किए गए हैं; इसके अलावा यह कटिहार ज़िले में कहीं और नहीं देखा गया। इसके एक पौधे में 23 से 35 फूल लगते हैं जिससे केवल 6-10 बीज ही रिकॉर्ड किए गए हैं। कुछ बीजों को इकट्ठा करके टी. एम. भागलपुर विश्वविद्यालय के वनस्पति उद्यान में उगाया गया है। केवल 7 प्रतिशत बीज ही अंकुरित हुए, और उनमें से भी बहुत कम पौधे जीवित रहे। कटिहार में हो रहे त्वरित शहरीकरण के चलते इस प्रजाति के प्राकृतवास के नष्ट होने का खतरा सामने है। जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय की मालती गोयल ने *करंट साइन्स* में बताया है कि इसके संरक्षण के प्रयास तुरंत करने की ज़रूरत है। ***(स्रोत फीचर्स)***